IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M05/2/ABHIN/HP1/HIN/TZ0/XX/T+

22052304

HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Monday 16 May 2005 (morning)
Lundi 16 mai 2005 (matin)
Lunes 16 de mayo de 2005 (mañana)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क मनोरंजन उद्योग

स्वप्नलोक हुआ साकार

मनोरंजन के क्षेत्र में दुनिया भारत का लोहा मानने लगी है. भारतीय फिल्मों के प्रति आकर्षण दिनोदिन बढ़ रहा है.

"फिल्मोद्योग की ताकत भुनाई जा रही है"

ऐश्वर्य राय

① भारतीय फिल्मों का विश्व भर में कारोबार 2006 तक 1.1 खरब डॉलर तक हो जाएगा. फिल्मों के अलावा मनोरंजन के साधन हैं—मीडिया उद्योग और टेलीविजन उद्योग. टेलीविजन उद्योग तो तेजी से बढ़ रहा है. संगीत, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, यहां तक कि अखबार भी भारत में इस क्षेत्र के विकास में योगदान दे रहे हैं. चूंकि मैं फिल्मों से जुड़ी हूं इसलिए यह देखना दिलचस्प रहेगा कि इन सभी क्षेत्रों के लिए—समाचार चैनलों के लिए भी—फिल्में कितना सॉफ्टवेअर तैयार कर रही हैं. फिल्म उद्योग की ताकत को अब बखूबी भुनाया जा रहा है.

② इसका दूसरा पहलू, जिस पर काबू पाने की जरूरत है, यह है कि फिल्मों की संख्या गुणवत्ता पर हावी हो रही है. भारतीय फिल्में विश्व मंच पर अपनी पहचान बना रही हैं. *लगान, देवदास* और *चोखेर बाली*. अंतिम दो फिल्मों में चूंकि मैं हूं, इसलिए विदेशों में इन फिल्मों की प्रतिक्रिया मैंने देखी है. यह बहुत उत्साहवर्धक है. अमेरिका या कहें हॉलीवुड ने जिस तरह फिल्म विपणन को एक कला के रूप में विकसित कर उसका दोहन किया है, वह काबिलेतारीफ है. मेरा मानना है कि हमें अपनी समृद्ध संस्कृति को भी देखना चाहिए जो विश्व स्तर पर पहचान पाने का इंतजार कर रही है.

③ मुझे तो मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता ने ऐसा मौका दिया. कान फिल्म समारोह में ज्युरी के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व करना, *इंडिया टुडे* के बाद *टाइम* पत्रिका के आवरण पर छपना, उसी दिशा में कदम रहे हैं. मनोरंजन के मामले में हम मीडिया को नहीं छोड़ सकते. मैं कह सकती हूं कि भारत के उद्योग को विश्व स्तर पर आगे ले जाने का यह सही मौका है. और यह भीतरी शक्ति के बल पर ही हो सकता. हम जानते हैं कि हमारी फिल्मों को विश्व स्तर पर प्रशंसा मिलती रही है. वे हमारी भारतीयता, हमारी भावनाओं और हमारे पारिवारिक मूल्यों पर जोर देती हैं. फिल्मों ने पश्चिम के बारे में कई भ्रम खड़े किए हैं. पर हमारी संस्कृति और आध्यात्मिकता वास्तविक है. हमें अपने सपनों और आकांक्षाओं का अधिक कारगर ढंग से विपणन करना होगा.

④ पिछले कई सालों से अनेक देश हमें न्यौता दे रहे हैं. उन्हें शूटिंग से हमेशा फायदा नहीं होता क्योंकि हम सीमित बजट में, छोटी यूनिट लेकर प्रायः वहां जाते हैं. लेकिन वे जानते हैं कि फिल्में उनके प्रचार का सशक्त माध्यम हैं. भारत की भौगोलिक और सांस्कृतिक समृद्धि और विविधता का कोई सानी नहीं है. ऐसे में सरकार की ओर से सही प्रोत्साहन और समर्थन जरूरी है.

⑤ अंत में सॉफ्ट पावर को पुनर्भाषित करने के लिए मैं कहूंगी कि इसे वूमन पावर (महिला शक्ति) भी कह सकते हैं. मनोरंजन उद्योग में हम महिलाओं के शोषण पर अफसोस जताते हैं. दुख की बात यह है कि यहां आने वाली लड़कियां सभी वर्जनाओं के त्याग को ही प्रवेश का शार्टकट मानती हैं. वे यह नहीं समझतीं कि ऐसी सफलता क्षणिक होती है. मैंने तो अपने उसूलों से जुड़े रहने का ही विकल्प चुना. महिलाओं को मैं कहना चाहूंगी कि अपनी शक्ति को पूरी तरह पहचानें. अपने फैसले खुद लें. अपनी योग्यता का भरपूर दोहन करें, लेकिन अपना शोषण न होने दें. अरसे बाद खुद को अभिव्यक्त करके मैं बहुत खुश हूं. ये पिछली रात को अपने हाथ से लिखे उद्गार हैं. मुझे लगा कि मैं फिर स्कूल में पहुंच गई हूं और होमवर्क कर रही हूं. मुझे खुशी है कि श्रोताओं ने मुझे सुना और मैं मानती हूं कि आज के प्रतियोगी दौर में एक महिला को समझेंगे, और मैंने जो साड़ी पहनी है, उससे अधिक कुछ याद रखेंगे.

(ऐश्वर्य राय फिल्म अभिनेत्री हैं)

पाठांश ख

काश, मेरे घर भी छापा पड़ जाए!

व्यंग्यकार

बरसों से एक चाह मन में दबे सूख कर पापड़ हो गई.

क्या? एक बार, बस एक बार मेरे घर छापा पड़ जाए और मैं रातों रात चर्चित हो जाऊँ.

जो पब्लिसिटी मुझे 50 वर्ष का लेखन न दे सका, वह एक छापा दे सकता है क्योंकि आज समाज में क़लम से ज़्यादा यश कुकर्म में है.

लोग माफ़िया की तरह गले में हार डालेंगे.

हाय, इस दुबले-सूखे को हिंदी का व्यंग्यकार समझते थे.. स्मगलर निकला?

सुन ली भगवान ने

प्रभु सबकी सुनता है. एक दिन पड़ गया. वे चार थे जो छापा डालने आए थे और ग़लत अंग्रेजी में बतिया रहे थे.

पूछा-" केपी सक्सेना कौन है?"

मैंने कहा- "मैं हूँ न."

चारों अंग्रेज़ी में हँस दिए. मैं हिंदी में खिसिया कर रह गया.

एक ने पूछा- "यह महिला तुम्हारी पत्नी हैं?"

मैंने धीरे से कहा- "अभी तक तो हैं ही. दिल्ली की हैं. अब ऐसी दूसरी नहीं कोई. वह फैक्ट्री ही बंद हो गई जहाँ ऐसे प्रोडक्ट बनते थे."

उन्होंने पत्नी नोट कर लिया. 'स्मगल्ड फ़्रॉम डेल्ही.'

पाठांश ग

महिला दिवस की महत्ता

■ महिला दिवस से जुड़ी मांगों को अब और अधिक अहम् बता रही हैं सुभाषिनी अली

पिछले कुछ सालों से महिला दिवस को मनाने वालों की संख्या बढ़ी है। शुरू-शुरू में तो इसे केवल वामपंथ से संबंधित महिला संगठन ही मनाते थे। फिर तमाम महिला संगठनों ने इसे अपने खास दिन या त्योहार के रूप में अपना लिया व उसके बाद अर्द्ध-सरकारी समूहों और सरकारी विभागों ने भी मनाना शुरू कर दिया। इस साल तो 8 मार्च की बधाई का संदेश एस एम एस तक पर आ गया। मुझे इस बात का अंदेशा है कि अगले साल तक 8 मार्च के ग्रीटिंग कार्ड और तोहफे भी बँटने लगेंगे। जैसा कि हर त्योहार और हर दिवस का बाजारीकरण होने लगा है वैसे ही महिला दिवस का भी करने की कोशिश की जाएगी। इससे तभी बचा जा सकता है जब हमें इस दिन के महत्व का पता चले।

8 मार्च की कहानी यूरोप और अमेरिका की महिलाओं की मतदान जैसे अधिकारों के लिए हुए संघर्ष के साथ जुड़ी हुई है। 28 फरवरी, 1909 को अमेरिका की समाजवादी महिलाओं ने मतदान का अधिकार प्राप्त करने के लिए देश भर में जुलूस, प्रदर्शन और धरनों का आयोजन किया था। इसके कुछ साल पहले पुरुषों को अधिकतर यूरोपीय देशों और अमेरिका में मतदान का अधिकार मिल चुका था। केवल विक्षिप्त लोग और महिलाएं इससे वंचित रह गई थीं। हर क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश हो चुका था। वे कारखानों में 14 से 18 घंटों तक काम करती थीं। अपनी मशीन के पास ही अपने नवजात शिशु को सुलाए रखती थीं। उन्हें दूध पिलाने के लिए भी छुट्टी नहीं मिल पाती थी। इन परिस्थितियों को बदलने के लिए महिला मजदूरों ने लंबी लड़ाईयाँ लड़ीं। 1909 में ही न्यूयार्क के कपड़ा बनाने वाले कारखानों की महिला मजदूरों ने 4 महीनों तक चलने वाली अपनी जबरदस्त हड़ताल की। इस हड़ताल की एक अनोखी बात यह थी कि हड़ताली महिलाओं का नारा था 'हमे रोटी और गुलाब के फूल, दोनों ही चाहिए।' अब रोटी का मतलब तो हम समझ सकते हैं, लेकिन गुलाब के फूल? इनका मजदूर महिलाओं के जीवन से भला क्या संबंध हो सकता है? हड़ताली महिलाओं ने अपनी बात समझाते हुए कहा कि हम रोटी तो माँग ही रहे हैं, लेकिन हम अपने और अपने बच्चों के जीवन में खुशियाँ, रंग और उल्लास भी चाहते हैं। न्यूयार्क की हड़ताली महिलाओं के लिए तमाम महिला संगठनों ने चंदा इकट्ठा किया और उनकी लड़ाई को हर तरह की मदद पहुँचाई और मतदान के अधिकार के संघर्ष को सबने आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। 1910 में जर्मनी में हुई अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में प्रख्यात कम्युनिस्ट महिला नेता क्लारा जेटकिन ने यह प्रस्ताव रखा कि हर साल 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।

पाठांश घ

चिंताजनक है प्रवृत्ति

किशोरों में बढ़ते अपराधों के मद्देनजर उनमें आत्मसम्मान की भावना जगानी होगी

गत कुछ वर्षों से भारत में किशोरों के किए गए अपराध कहीं ज़्यादा सामने आने लगे हैं। वे शहरों और कस्बों के आर्थिक तौर पर पिछड़े इलाकों तक सीमित नहीं रहे, महानगरों के संपन्न परिवारों के बच्चे भी यह अपराध अंजाम दे रहे हैं ।

ज़रा गौर करें। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की "भारत में अपराध" शीर्षक से आई नवीनतम रिपोर्ट किशोरों के अपराध के बारे में कुछ गंभीर संकेत करती है। हत्या, बलात्कार, चोरी, डकैती और अपहरण सरीखे गंभीर अपराधों में लिप्त अपराधियों में से ४१ फीसदी की उम्र १८ से ३० वर्ष के बीच थी। इसी तरह देश भर में अपराधों की इसी श्रेणी के लिए १८ वर्ष से कम आयु के लड़के देश भर में २३,४९७ अपराधों के लिए धरे गए - इनमें से ६१६ हत्या और ५४२ बलात्कार के आरोप में पकड़े गए । ब्यूरो के निदेशक रामावतार यादव कहते हैं कि किशोरों में अपराध की प्रवृत्ती बढ़ रही है ।

लेकिन युवा-सहायता-केंद्र में काम करनावाली डॉ. स्मिता सिंहा के अनुसार इस रिपोर्ट में कमियाँ भी हैं। कहती हैं - "देखिए, भारत में आबादी बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। तब तो स्पष्ट ही होगा कि अपराध करनेवालों की संख्या भी बढ़ेगी। अगर लिखा है कि अपराधियों में से ४१ फीसदी की उम्र १८ से ३० वर्ष के बीच में है तो इसका मतलब है कि कहीं ६० फीसदी इस उम्र के नहीं हैं । केवल युवाओं पर शक डालने का कोई भी लाभ नहीं हो सकता जब तक अपराध के सब कारणों की जाँच नहीं की जाए ।

युवाओं के अपराध की तरफ़ में जाने की कई वजहें हैं। अक्सर माता-पिता में टकराव, परिवार बिखरने, माता-पिता की लापरवाही और बिगड़ैल साथी किसी किशोर को पथभ्रष्ट करने में मददगार होते हैं। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं में "आज के लिए जियो" की प्रवृत्ती बढ़ने की वजह से वे अपराध की ओर प्रेरित होते हैं।

सामाजिक मानवविज्ञानी आशीष नंदी चेताते हैं - "भारत में अपराध बढ़ने की रफ़्तार दुनिया भर में सबसे तेज़ है। विकास के नाम पर बड़े पैमाने पर लोगों के अपनी जड़ों से कटने के कारण सामुदायिक संबंध टूटने से अपराध बड़ी तेज़ी से बढ़ रहे हैं।"

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि युवाओं के तौर-तरीके तय करने में टीवी ने भी प्रभावी भूमिका निभाई। यूनेस्को के एक ताज़ा अध्ययन के मुताबिक, लड़कों में आक्रामक छविवालों को प्रतीक के तौर पर अपनाने का रुझान है। मुंबई के जसलोक अस्पताल के मनोचिकित्सक डॉ. राजेश पारिख कहते हैं - "आपराधिक प्रवृत्ती हमारे घर के कमरों में आसानी से पहुँच जाती है और हिंसा से जुड़ी सनसनी ख़त्म होती जा रही है।" इन हिंसक तस्वीरों से प्रभावित होकर कई युवाओं को भ्रम हो जाता है कि वे कुछ भी करने के बाद बच जाएँगे।

एक अन्य मान्यता यह है कि आज के युवाओं का शारीरिक विकास बड़े तेज़ी से हो रहा है मगर उनका भावनात्मक विकास नहीं हो पाता। नतीजतन वे अपनी ऊर्जा ग़लत दिशा में लगाते हैं।

दिल्ली के स्कूली छात्र-छात्रा की सनसनी-खेज वीडियो की इंटरनेट पर बिक्री को लेकर मचे हंगामे के बाद अब इंटरनेट के दुष्परिणामों से बच्चों को बचाने को लेकर चिंता जताई जाने लगी हैं। सेंटर फॉर एडवोकेसी नामक गैरसरकारी संगठन की निदेशक अकिला सिवदास युवाओं के बर्ताव में गंभीर बदलावों और मनमानी गतिविधियों को "निगरानी का संकट" कहती हैं। उनके मुताबिक, "माता-पिता को चौकीदार की भूमिका निभाना बंद करके सहयोगी की भूमिका अपनानी होगी।

इसी विचार के हैं शिव कुमार चतुरवेदी जो जैपुर के सेंटर आफ सोसियल साइएंसस के अध्यक्ष हैं। उनके अनुसार, "हालाँकि ज़रूर आजकल परिवार बदल गए हैं यह कहना ग़लत होगा कि हमारा समाज एकदम पहले के जैसे नहीं है। लोगों को ज़माने के साथ चलना है, लेकिन अपने बच्चों को पूरा समर्थन भी देना है। जिनके माता-पिता उनकी देखभाल करें वे तो ज़्यादातर अपराध में नहीं फँसेंगे।